International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 29-05-2020; Accepted: 16-06-2020; Published: 01-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 01-03

कोविड-19 जैव विविधता संरक्षण: हमारे समाधान प्रकृति में

मोनिश अवस्थी

पटवारी, कार्यालय का नाम एवं पता- (मध्य प्रदेश राजस्व विभाग) तहसील कार्यालय सोहागपुर, जिला- होशंगाबाद, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

पूरा विश्व को कोविड-2019 जैसी भयावह महामारी से जूझ रहा है ,एक के बाद एक ऐसी अनेकों जानकारियां इस प्राकृतिक आपदा के संबंध में निकल कर सामने आ रही हैं जिसने संपूर्ण मानव जाति को गहन चिंतन में डूबा दिया है। अनेक देश जो विश्व की महाशक्ति के रूप में जाने जाते थे, वह भी आज इस महामारी के सामने बौने साबित हो रहे हैं परंतु एक पहलू ऐसा भी सामने आया है जिसने पर्यावरण से संबंधित सभी शिक्षाविदों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है; "प्रकृति- हमारा पर्यावरण", जो कई दशकों के उपरांत आज शुद्धता की मनोरम गाथा कह रहा है। आज संपूर्ण विश्व लॉक डाउन की स्थिति में है पर पर्यावरण जी उठा है।

एक ओर जहां कोविड-19 ने मानव जाति के ऊपर संकट पैदा किया है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण के लिए वरदान का काम किया है। हालांकि इस कोविड-19 की रोकथाम में भारत द्वारा किए गए प्रयासों को वैश्विक मंच पर अत्यंत सराहा गया है, जिस पर हम सभी भारतीयों को गर्व है। भारत के ऐसे अनेक प्रयासों की भी प्रशंसा पूर्व में होती रही है जो उसने जैव विविधता संरक्षण पर किए हैं। इस कोविड-19 महामारी के बीच जब भारत घरों में कैद है तब जालंधर से हिमालय का दीदार होना भारत एवं विश्व दोनों के लिए सुखद घटना का परिचायक है जो कार्य कई दशकों के आर्थिक प्रयासों के बाद भी संपन्न नहीं हो सका वह इस कोविड-19 महामारी के दौरान हुआ है प्रकृति में प्रदूषण का स्तर जहां दिल्ली में 500 तक पहुंचा था वह मार्च अंतिम सप्ताह में ही सिर्फ 69 था। दिल्ली के अनेक इलाकों में पीएम 2.5 का लेवल 20 ही रहा। दिल्ली के सबसे प्रदूषित माने जाने वाले बाहरी दिल्ली के शाहदरा इलाके में एक्यूआई 13 तक पहुंच गया, जो 27 मार्च को दिल्ली में सबसे साफ हवा की स्थिति दिखाता है अगर हम अपनी प्रकृति की ओर देखें तो हम पाते हैं कि एक मां जैसे अपने बच्चे को अपनी गोद में रखती है उसकी सुरक्षा उसकी भूख प्यास का ख्याल रखती है वैसे ही हमारी प्रकृति में हमें मां समान संरक्षण प्रदान किया है, परंतु हमने अपने स्वार्थ सिद्ध करने हेतु उसी मां को कष्ट दिया है। आज आवश्यकता है एक सामूहिक जिम्मेदारी जो विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को निभाना चाहिए और जैव विविधता संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। आज मनुष्य द्वारा किए गए कार्यों से स्थानीय स्तर पर पर्यावरण की गुणवत्ता में ह्रास होता है- जिसे प्रदूषण कहा जाता है प्रदूषण उत्पन्न करने वाले पदार्थों को प्रदूषक कहते हैं प्रदूषक मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं-

(1). सूक्ष्म जीवों द्वारा अपघटनीय- वह पदार्थ सूक्ष्म जीवों द्वारा अपघटित होकर विषाक्त प्रभाव को देते हैं अपघटनीय प्रदूषक कहलाते हैं। जैसे जैवीय अपशिष्ट पदार्थ एवं कूड़ा-करकट आदि। ध्यान देने योग्य यह है कि इन पदार्थों की एक निश्चित मात्रा ही सूक्ष्म जीवों द्वारा अपघटित हो पाती है। तथा जब यह अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाते हैं तो इनका अपघटन सूक्ष्म जीवों द्वारा नहीं हो पाता तो यह प्रदूषण का रूप ले लेते हैं।

(2). सूक्ष्म जीवों द्वारा अनपघटनीय- ऐसे पदार्थ जो सूक्ष्म जीवों द्वारा अपघटित नहीं हो पाते अनपघटनीय प्रदूषक कहलाते हैं। यह आरंभ से ही हानिकारक होते हैं, जैसे जहरीली गैसे, जहरीली भारी धातुएं- सीसा, पारा, आर्सेनिक तथा रासायनिक योगिक आदि। इस प्रदूषण के कई प्रकार हैं- वायु, जल, मृदा, धोनी एवं ठोस अपशिष्ट।

पर्यावरण में व्यापक पैमाने पर पैर पसारते प्रदूषण की समस्या अत्यधिक विकराल है जो विश्व के समस्त प्राणियों पर प्रत्यक्ष रूप से अपना प्रभाव डालती है। प्रदूषण केवल भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की समस्या है। मानव का जीवन अग्नि, वायु, जल, मिट्टी और आकाश पंचमहाभूतों से मिलकर बना होता है। समस्त आवश्यक जीवनोपार्जन सामग्री मनुष्य को प्रकृति से ही प्राप्त होती है। अतः यह कहना कि प्रकृति के पास ही समाधान है तो अतिशयोक्ति कतई नहीं होगी, क्योंकि मिट्टी से कच्चा माल प्राप्त होता है तथा जीवन व्यवस्था वायु, जल आदि के द्वारा ही संचालित होती है, अतः मनुष्य का संपूर्ण आहार प्रकृति की ही देन है। मनुष्यों का यह दायित्व है कि वह संपूर्ण पर्यावरण को संचालित करने वाले सिद्धांतों और नियमों को स्वीकार करें एवं अपने दैनिक जीवन में शामिल करें। क्योंकि आधुनिकता के बढ़ते वर्चस्व से नुकसान प्रकृति को ही झेलना पड़ रहा है। विगत 30 40 वर्ष पूर्व पर्यावरण की जो स्थिति थी वह वर्तमान स्थिति से कई गुना बेहतर थी। स्वस्थ्य पर्यावरण के लिए प्रकृति का अक्षुण्ण रहना परम आवश्यक है।

औद्योगिक विकास और भौतिक समृद्धि की लालसा में मनुष्य प्राकृतिक संतुलन को अस्थिर करता जा रहा है, जिससे मौसम में अनुचित परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। वनों की अनावश्यक कटाई, जनसंख्या वृद्धि अनेक ऐसे कारण हैं जो पर्यावरणीय अस्थिरता का कारक बन रहे हैं। पृथ्वी के समस्त प्राणी एक दूसरे पर आश्रित हैं एवं विश्व का प्रत्येक पदार्थ एक दूसरे द्वारा प्रभावित होता है। आज हम एक ऐसी वैश्विक महामारी के बीच खड़े हुए हैं जहां पर आगे क्या होगा यह निश्चित नहीं है। तो क्या हम ऐसे में यह सोचने की अधिकारी नहीं बनते की जो हमने अपनी प्रकृति के साथ किया आज उसी का परिणाम हम भुगत रहे हैं? क्या हमें अभी भी अपनी प्रकृति के बारे में सजग नहीं होना चाहिए?यह ऐसे सवाल है जो विश्व के प्रत्येक प्राणी के बारे में उठने चाहिए और पहले से अधिक मजबूती से हमें अपनी प्रकृति को बचाने आगे होना चाहिए। कोविड 2019 के समय के पूर्व देखा जाए तो स्थिति यह रही है कि विज्ञान से होने वाले दुष्प्रभाव से संपूर्ण पृथ्वी उजाड़ होने की स्थिति में बढ़ने लगी थी। प्रकृति को नुकसान पहुंचना मानव सभ्यता के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

प्रश्न यह उठता है कि ऐसे क्या उपाय करना चाहिए की जैव विविधता को संरक्षण प्राप्त हो! तो इसका उत्तर यही होगा कि हमारा समाधान प्रकृति में ही है बस कुछ प्रयासों की आवश्यकता है। पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न वैश्विक संगठनों ने जैव विविधता के संरक्षण हेतु अनेक कार्य योजना तैयार की है। विश्व को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने हेतु संयुक्त राष्ट्र द्वारा 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस घोषित किया गया है। प्रतिवर्ष इस दिन विभिन्न संस्थाएं पर्यावरण जागरूकता हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित करते हैं। अनेक वैश्विक मंचों पर विभिन्न देशों ने जलवायु परिवर्तन की समस्या को मुख्य समस्या माना है तथा इसके लिए विभिन्न उपायों को अपनाने का प्रयास भी किया है। जलवायु परिवर्तन एक गंभीर चुनौती के रूप में विश्व के प्रत्येक देश के सम्मुख खड़ी है, समुद्री जल के बढ़ते स्तर एवं मौसम के बदलते स्वरूप ने लाखों लोगों के जीवन पर प्रभाव डाला है। अनेकों प्रयासों के बावजूद भी ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि अंकित की गई है। पर्यावरण

परिवर्तन से खाद्य उत्पादन को भी खतरा हो सकने की संभावना बढ़ गई है। यदि आंकड़ों में देखा जाए तो 1980 से 2011 के ही बीच बाढ़ के कारण दुनिया भर के तकरीबन 5 मिलियन लोग प्रभावित हुए हैं और विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा है। यदि पिछले वर्ष भारत में आई बाढ़ से हुए नुकसान का आकलन किया जाए तो कई हजारों लोगों के जीवन में अनेकों परेशानियों के साथ लाखों रुपए की संपत्ति को नुकसान पहुंचा है, कई राज्य इसमें बुरी तरह अर्थव्यवस्था के नुकसान का सामना कर रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का भी कहना है कि सूखा, खराब हवा, और पानी की खराब गुणवत्ता के कारण तटीय और निचले इलाकों में खतरनाक स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो रही हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए ठोस कदम उठाना प्रारंभ कर दिया है। इसी के तहत किया गया पेरिस समझौता जलवायु परिवर्तन और उसके नकारात्मक प्रभाव से निपटने हेतु वर्ष 2015 में प्रत्येक देश द्वारा लगभग अपनाया जा चुका है। इस समझौते का मुख्य उद्देश्य ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन को बहुत हद तक कम करने का है, आगे आने वाले समय में तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस रखने का लक्ष्य तय किया गया है। वर्तमान में पेरिस समझौते में कुल 197 देश हैं। मुख्य वैज्ञानिक शोध संस्था आईपीसीसी के अनुसार वर्ष 1950 के दशक के बाद इन गैसों का उत्सर्जन ही वैश्विक तापमान में वृद्धि का प्रमुख कारण रहा है। यदि विकसित देशों के प्रयासों की ओर ध्यान दें तो सबसे महत्वपूर्ण न्यूजीलैंड का उदाहरण आता है- जीरो कार्बन बिल न्यूजीलैंड ने वर्ष 2050 तक कार्बन उत्सर्जन को पूर्णत: समाप्त करने हेतु "जीरो कार्बन बिल" पारित किया है। इसके तहत सरकार को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सलाह देने तथा कार्बन बजट की निर्धारण हेतु एक स्वतंत्र जलवायु परिवर्तन आयोग का गठन किया गया है तथा न्यूजीलैंड ने वर्ष 2035 तक बिजली ग्रिड को पूर्णत: अक्षय ऊर्जा से संचालित करने का भी लक्ष्य रखा है। यदि भारत की बात की जाए तो भारत ने अप्रैल 2016 में पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। भारत की आईएनडीसी में सकल घरेलू उत्पाद उत्सर्जन की तीव्रता को वर्ष 2030 तक 35 से 35% तक कम करने का लक्ष्य रखा है एवं इसके अलावा वर्ष 2030 तक अतिरिक्त वृक्षारोपण द्वारा 2.5 से 3 बिलियन टन CO2 के समतुल्य अतिरिक्त कार्बन ह्रास सृजित करने का लक्ष्य रखा है। जहां एक और विभिन्न देश अपने-अपने स्तर पर प्रयासरत हैं वही विदित है कि पेरिस समझौते के अनुसार अमेरिका को 2025 तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन स्तर को 26 से 28% तक कम करना था, परंतु अमेरिका इस समझौते से अलग होने का ऐलान कर चुका है, जिसका अनुचित प्रभाव जलवायु परिवर्तन की रोकथाम हेतु किए जा रहे प्रयासों पर पड़ेगा। इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन का व्यापक असर हमारे सम्मुख आकर खड़ा हुआ है वह है "सौर मिनिमम" की स्थिति। वैज्ञानिकों के मुताबिक वर्तमान में सूरज की सतह पर गतिविधियां बेहद कम हो गई हैं से धूप की कमी के सबसे बड़े काल की और हम प्रवेश करते जा रहे हैं। सूरज में उपस्थित काले धब्बे लगभग विलुप्त की स्थिति में आ गए हैं। वैज्ञानिकों के मतानुसार जहां संपूर्ण विश्व लॉक डाउन की स्थिति में है वही सूरज भी लॉक डाउन की स्थिति में आ गया है। एक ओर जहां हमारा लॉक डाउन कोरोनावायरस से बचाव के लिए है वही सूरज का लॉक डाउन ठंड, भूकंप और अकाल का कारण बन सकता है। वर्ष 1790 और 1830 के बीच भी इसी तरह की स्थिति पैदा हुई थी जिसको डाल्टन मिनिमम काल का नाम दिया गया था उस दौरान भी तेज ठंड, अकाल और शक्तिशाली ज्वालामुखी की घटना सामने आई थी। इस वर्तमान समय में उत्पन्न सौर मिनिमम की घटना को भी वैज्ञानिकों ने पूर्ववर्ती समय की वापसी का संकेत माना है। खगोलविद डॉ. टोनी फिलिप्स अनुसार "20 सालों में तापमान में करीब 2 डिग्री सेल्सियस की कमी दर्ज की जा चुकी है, जिससे जलवायु असंतुलन के कारण औसत वैश्विक तापमान में 0.4 से 0.7 डिग्री सेल्सियस तक की कमी हुई है सूरज का चुंबकीय क्षेत्र कमजोर होने से ब्रह्मांडीय किरणों के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य पर व्यापक असर पड़ने की आशंका है।"

इन सबके बीच भारत जहां कोविड-19 की रोकथाम में वैश्विक मंच पर मार्गदर्शक का कार्य कर रहा है उसी प्रकार जैव विविधता संरक्षण में भी भारत के द्वारा किए गए प्रयास विश्व के लिए मार्गदर्शन का कार्य कर रहे हैं। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा फरवरी 2020 में एक कार्यक्रम के दौरान जैव विविधता संरक्षण पर जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया है, उन्होंने अपने संबोधन में जैव विविधता को मानव सभ्यता के लिए अनोखे खजाने के रूप में वर्णित किया है तथा उसे संजोने के प्रयास पर बल दिया है। उनके संबोधन में यह स्पष्ट वर्णित होता है की मानव सभ्यता की समस्त समाधान प्रकृति में ही समाहित हैं उनके अनुसार भारतीय संस्कृति जीव मात्र के प्रति दया का भाव, प्रकृति के प्रति प्रेम आदि की शिक्षा प्रदान करती है, हर साल दुनिया भर से अनेकों प्रजातियों के पक्षियों का भारत में आगमन होता रहता है। पिछले दिनों गुजरात के गांधीनगर में आयोजित कोप-13 सम्मेलन में भी इस विषय पर काफी चिंतन मनन हुआ है और भारत के प्रयासों को काफी सराहा भी गया है। आने वाले 3 वर्षों तक भारत को प्रवासी पक्षियों पर होने वाले सम्मेलन की अध्यक्षता का अवसर भी प्राप्त हुआ है। कोप-13 सम्मेलन में मेघालय में मछलियों की एक नवीन प्रजातियों की खोज को भी प्रशंसा मिली है यह मछली ऐसी गहरी और अंधेरी भूमिगत गुफा में रहती है जहां रोशनी भी शायद नहीं पहुंच पाए। यह खोज भारत की जैव विविधता को एक नया आयाम देने वाला है। भारत देश की जैव विविधता मानव सभ्यता के लिए खजाना है हम सबको इसे मिलकर संजोना है। भारत सरकार द्वारा अनेक ऐसी कार्ययोजना तैयार की गई है जो जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करें जैसे- पर्यावरण अदालतें, पर्यावरण हितैषी उत्पादों का उत्पादन, पेट्रोल को शीशा मुक्त करना, हानिकारक कीटनाशकों पर प्रतिबंध, राष्ट्रीय कूड़ा प्रबंधन परिषद का गठन, पब्लिक लायबिलिटी इंश्योरेंस का नियम, समुद्र तट के निकट होटलों पर कार्यवाही, राष्ट्रीय नदी कार्य योजना, सौर ऊर्जा आयोग आदि। जैव विविधता हम सबकी अमूल्य धरोहर है, इसकी रक्षा करना हम सभी का परम दायित्व है। हमारे वन, हमारी प्रकृति से प्राप्त औषधियां हमारे लिए जीवनदायिनी हैं। हम सबको जैव विविधता के संरक्षण के लिए निचले स्तर पर प्रयास करना होगा और जागरूकता का प्रसार करना होगा।

यदि निष्कर्ष की ओर देखा जाए तो जहां कोविड-19 महामारी ने संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट में लेकर रखा है वहीं इससे एक महत्वपूर्ण लाभ भी हुआ है, दिल्ली के प्रदूषण स्तर में इतनी गिरावट कई सालों के प्रयास से नहीं हो सकी वह इस लाकडाउन के कारण हुई है। धरती के बढ़ते तापमान को जो ग्लोबल वार्मिंग के कारण हुआ इंटर गवर्नमेंट पैनल(IPCC) ने भी खतरे की ओर बढ़ते विश्व की ओर इंगित किया है। ग्रीन हाउस गैसों के कारण सबसे बड़ा खतरा ओजोन परत को हुआ है। यह परत खतरनाक पराबैगनी किरणों से हमारी रक्षा करती है, परंतु कुछ वर्षों पहले वैज्ञानिकों ने आर्कटिक क्षेत्र के ऊपर उत्तरी गोलार्ध में दस लाख वर्ग किलोमीटर की परिधि वाला छेद देखा था जिसने मानव पर खतरे का संकेत दिया था पोलर वर्टेक्स जो बहुत शक्तिशाली था जिसकी वजह से यह छिद्र स्वत: ही बंद हो गया कुछ लोगों का मानना था कि यह छिद्र लॉक डाउन की वजह से बंद हुआ है परंतु पोलर वर्टेक्स एक प्राकृतिक क्रियाकलाप का ही रूप था जिसके द्वारा यह खतरनाक छिद्र बंद हुआ। यह खबर उस वक्त आई जब सारा विश्व को रोना महामारी को झेल रहा है। हम सब इस इंतजार में हैं कि जल्द ही कोरोनावायरस की दवा खोजी जाये ताकि मानव सभ्यता की रक्षा की जा सके। इस महामारी ने जहां प्रत्येक देश को एक नई धुरी की ओर अग्रसर किया है, वहीं इसने जैव विविधता संरक्षण पर भी और अधिक प्रयास करने पर बल दिया है। मानव सभ्यता पूर्णत: जैव विविधता से जुड़ी हुई है, यदि हम प्रकृति का संरक्षण करेंगे तभी प्रकृति हमारा संरक्षण करेगी हमारे वन हमारी धरती समस्त जीव-जंतु इस जैव विविधता की अमूल्य धरोहर हैं। जिनके बिना मनुष्य का भी जीवन संभव नहीं है। समस्त प्राचीन लेखों में प्रकृति के प्रति अपार श्रद्धा दर्शाई गई है। अतः आज हम इस महामारी पर विजय प्राप्त करते हुए अपनी जैव विविधता संरक्षण की कार्य योजना की ओर और अधिक बल प्रदान करेंगे, ऐसी मुझे आशा है।

संदर्भ सूची

1. अमर उजाला-ओजोन छिद्र बंद होने की घटना, 1 मई 2020 को ऑनलाइन प्रकाशन।
2. आज तक- दिल्ली के प्रदूषण के संबंध में प्रकाशित जानकारी द्वारा।

3. दृष्टि आईएएस- पेरिस समझौते की मूलभूत जानकारी।
4. इंडिया न्यूज़- प्रधानमंत्री मोदी द्वारा जैव विविधता संरक्षण का विषय मन की बात कार्यक्रम में उठाया जाना।
5. www.scottbuz.org. - पर्यावरण एवं पर्यावरण प्रदूषण के बारे में संक्षिप्त विवेचना।
6. www.economictimes.com- कोरोना काल में लॉक डाउन का पर्यावरण पर प्रभाव।
7. www.indiawaterportal.org- पर्यावरण के प्रति जागरूकता और हमारा भविष्य।